2

हो जिनवाणी जू....

हो जिनवाणी जू (जिनवाणी माता), तुम मोकों तारोगी।।टेक।।
आदि अन्त अविरुद्ध वचन तें, संशय भ्रम निरवारोगी।।१।।
जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
ज्यों प्रतिपालित गाय वत्स कौ, त्यों ही मुझको पालोगी।।२।।
जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
सन्मुख काल बाघ जब आवै, तब तत्काल उबारोगी।।३।।
जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
'बुधजन' दास विनवै माता, या विनती उर धारोगी।।४।।
जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
उलझी रह्यो हूँ मोह जाल में, ताकों तुम सुरझारोगी।।५।।
जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...

हे जिनवाणी माता! आप ही मुझको इस संसार चक्र से पार कराने वाली हो।।टेक।।

आपके वचन प्रारम्भ से लेकर अंत तक परस्पर विरोध से रहित है, एवं आप ही मेरा संशय और भ्रम का निवारण करने वाली हो।।१।।

जिस प्रकार गाय अपने बछड़े को पालती है उसी प्रकार आप मेरा पालन पोषण करोगी अर्थात् मुझे राग–द्वेष आदि विकारी भावों से बचाकर सुख का मार्ग बताओगी।।२।।

जब यम रूपी बाघ मेरे सामने आयेगा अर्थात् जब मृत्यु का समय आयेगा तो आप ही उसके भय से निर्भय करोगी।।३।।

कवि बुधजनजी कहते हैं कि हे जिनवाणी माता! मेरी यही विनय है कि मेरा यह निवेदन स्वीकार करो।।४।।

मैं मोह के जाल में फंस गया हूँ इसलिये अब आप ही मुझे इस जाल से मुक्त करोगी अर्थात् मुझे कर्म रूपी शत्रुओं से मुक्त करोगी।।५।।

हे जिनवाणी माता! वास्तव में तुम ही संसार सागर से मुझे पार करने में समर्थ हो ।